



नीबू उत्पादन

इस प्रजाति में रोपण के छठे वर्ष के दौरान प्रति वृक्ष प्रति वर्ष फलों की औसत संख्या 1425 (1300-1500) और औसत उपज 60.15 किग्रा. (55-65 किग्रा.) प्रति पौधा प्रति वर्ष प्राप्त होती है। इसके फलों का औसत वजन 42.57 ग्राम होता है; फल का आकार 42.71 मि.मी. x 42.82 मि.मी., फल अक्ष ठोस, फाँक की संख्या 11, छिलके की मोटाई 1.59 मि.मी. और फलों में बीज की संख्या कम (6-8) होती है। फलों के रस में अम्ल 6.84%, टी.एस.एस. 7.340 ब्रिक्स और एस्कॉर्बिक एसिड 43.45 मि. ग्रा./100 मि.ली. होता है। ज्यादातर इसमें 3-9 गुच्छों में फल आते हैं, फल आकार में गोल, पकने पर पीले रंग के, चिकने और मध्यम मोटे छिलके वाले होते हैं। फल, जुलाई-अगस्त, दिसंबर-जनवरी और अप्रैल-मई के दौरान तुड़ाई के लिए तैयार होते हैं। फल, गर्मियों में 125-135 दिनों में पकते हैं जबकि बरसात और सर्दियों के मौसम में 145-155 दिन लग सकते हैं।



थार वैभव की फलों से लदी डालियाँ

थार वैभव है नीबू की नई किस्म

डी एस मिश्रा*, संजय सिंह*, विकास यादव* और बी डी शर्मा*

नीबूवर्गीय फलों में कागजी नीबू अपनी उपयोगिता और औषधीय गुणों के कारण सबसे अधिक लोकप्रिय फल है। इसके औषधीय गुणों एवं घरेलू बाजार में मांग को ध्यान में रखते हुए 34 जननद्रव्यों को केंद्र के फील्ड जीन बैंक में स्थापित कर उसका मूल्यांकन किया गया। इसमें चयन पद्धति से थार वैभव प्रजाति विकसित की गयी।

कागजी नीबू की यह किस्म गुच्छेदार एवं अधिक उत्पादन देने वाली है। इसके फल आकर्षक पीले रंग के चिकने छिलके वाले गोल होते हैं। फल रसदार (49%), अम्लीय (6.84%) तथा फलों में बीज की संख्या कम (6-8) होती है। यह रोपण के तीसरे वर्ष के दौरान फूलने और फलने लगती है।

भूमि एवं जलवायु

नीबू को ऐसी किसी भी मृदा में उगाया जा सकता है, जिसका जल निकास अच्छा

होने के साथ-साथ ही उसमें वायु संचार की उचित मात्रा हो तथा जड़ों को उचित गहराई तक जाने में कोई अवरोध उत्पन्न न हो। नीबू की 6.50 से 7.50 पी.एच. तक की भूमि में खेती की जा सकती है।

आमतौर पर, 500-750 मि.मी. वार्षिक वर्षा पश्चिमी भारत की बारानी परिस्थितियों में फसल को संतोषजनक ढंग से उगाने के लिए पर्याप्त होती है। 13-37 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके वानस्पतिक विकास और पुष्पण के लिए उपयुक्त है। सामान्यतौर पर शुष्क जलवायु नीबू की टिकाऊ एवं अधिक उत्पादन के लिये उचित पाई गई है।

प्रवर्धन

व्यावसायिक स्तर पर नीबू का प्रसारण गूटी व बीज द्वारा करना चाहिए। मुख्य रूप से इसे बीज के माध्यम से प्रवर्धित किया जाना चाहिए क्योंकि इसमें उच्च बहु भ्रूण होते हैं (40-60%)। इसी कारण बीजों से मातृ पौधों की तरह ही पौधे पैदा करते हैं। बीज द्वारा तैयार किये गये पौधे में फलन केवल 2-3 साल आ पाता है और ऐसे पौधे विपरीत परिस्थितियों के प्रति अधिक सहिष्णु, दीर्घजीवी एवं विषाणुजनित रोगों से मुक्त होते हैं। बीज प्रवर्धन

*केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र (भाकृअनुप-के. शु. बा. सं.), वेजलपुर, पंचमहल (गोधरा), गुजरात



थार वैभव नीबू में गुच्छों में पुष्पण और फलन

के लिए, ताजे कटे फलों से जुलाई-अगस्त के दौरान बीज एकत्र किए जा सकते हैं। बुआई से पहले, बीज को कवकजनित रोगों से बचाने के लिए कवकनाशी (0.20% मैन्कोजेब + कार्बेन्डाजिम) से उपचारित किया जाता है। बीज सितंबर-अक्टूबर में बोए जाते हैं और इसके 6 से 8 महीने बाद पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाएगी।

गड्डे की तैयारी एवं पौध रोपण

नीबू की इस प्रजाति की रोपाई 5 मीटर की दूरी पर मृदा उर्वरता के अनुसार करनी चाहिए। रोपण हेतु जुलाई-अगस्त माह अच्छा पाया गया है। पौधे लगाने के लिए मई महीने में 5 मीटर के अंतराल पर 75 से 100 घन सें.मी. के गड्डे तैयार कर लेते हैं। यदि जमीन में कंकड़ की तह हो तो उसे निकाल देना चाहिए। इन गड्डों को 20-30 दिनों तक खुला छोड़कर 4-5 टोकरी खाद में ट्राइकोडर्मा युक्त

फलों की तुड़ाई एवं उपज

थार वैभव के परिपक्व फल पूरे वर्ष उपलब्ध होते हैं, हालांकि पश्चिमी भारत के वर्षा आधारित अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र के तहत फल की उपलब्धता अप्रैल-अगस्त के दौरान होती है। परिपक्व फलों को हरे पीले रंग की अवस्था में तोड़ दिया जाता है। रोपण के छठे वर्ष के दौरान इस किस्म में प्रति वृक्ष प्रति वर्ष औसत उपज 60 किग्रा. प्राप्त होती है।



थार वैभव के तुड़ाई उपरंत फल

गोबर की सड़ी खाद (30-40 किग्रा.), 150 ग्राम एसएसपी और 150 ग्राम नीम खली के साथ गड्डे की ऊपरी आधी मिट्टी को मिलाना चाहिए। पश्चिमी भारत में बारानी परिस्थितियों में नीबू की रोपाई का सर्वोत्तम समय जुलाई-अगस्त है।

खाद एवं उर्वरक

पौधों की अच्छी बढ़वार, अधिक फलन एवं पेड़ों को स्वस्थ रखने के लिये प्रत्येक पौधे में 10 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 200 ग्रा. नाइट्रोजन, 150 ग्रा. फॉस्फोरस एवं 100 ग्रा. पोटाश की मात्रा प्रति वर्ष डालनी चाहिए। खाद एवं उर्वरक की यह मात्रा पांच वर्षों तक गुणित अनुपात में बढ़ाते रहना चाहिए। इस प्रकार 5 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले वृक्ष को 1000 ग्रा. नाइट्रोजन, 750 ग्रा. फॉस्फोरस और 500 ग्रा. पोटाश के अतिरिक्त 50 कि. ग्रा. गोबर की सड़ी खाद डालना उत्तम होता है। शुष्क क्षेत्रों में गोबर की सड़ी खाद की पूरी मात्रा साल में एक बार मानसून (जुलाई) की शुरुआत में एवं उर्वरकों (एनपीके) की मात्रा जुलाई और नवंबर में दो बराबर भागों में डालनी चाहिए।

सिंचाई

नीबू के पौधों में थोड़ा सूखा सहने की क्षमता होती है, इसलिए इसे बारानी परिस्थितियों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। पौधे की स्थापना के बाद 1-2 वर्षों के लिए पौधे की आवश्यकता के आधार पर सिंचाई की जा सकती है। खासकर, गर्मियों के दौरान बेहतर स्थापना और फलने के दौरान 7 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिये। शीत ऋतु की फसल की सिंचाई 20 दिनों के अन्तराल पर की जा सकती है। आमतौर पर मानसून के मौसम के दौरान मध्य जून से अक्टूबर तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। सिंचाई के जल की कमी वाले क्षेत्रों में ड्रिप विधि से सिंचाई करनी चाहिए।

पलवार

पश्चिमी भारत की वर्षा आधारित शुष्क परिस्थितियों में, नीबू की सफल खेती के लिए वृक्ष के तने के चारों ओर नीचे जैविक पलवार का प्रयोग लाभकारी पाया जाता है। जैविक पलवार जैसे धान, मक्का तथा घास इत्यादि से मिट्टी में केंचुओं और लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ जाती है तथा मिट्टी की नमी बरकरार रहती है, जिसका सीधा अनुकूल प्रभाव पौधों के विकास तथा पैदावार पर पड़ता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

आमतौर पर, पश्चिमी भारत की वर्षा

थार वैभव के गुण

इस किस्म में फैलने वाली वृद्धि होती है तथा टहनियों पर काँटे कम पाये जाते हैं। इसकी पत्तियाँ गहरे हरे रंग की होती हैं। पांच वर्ष के पेड़ की ऊँचाई 5.98 मी. और पौधे का फैलाव (4.31 X 4.46 मी. पाया गया।

पुष्पक्रम अक्षीय लघु रेसमोस, 4-10 छोटे फूल, सफेद रंग के होते हैं। इस किस्म में रोपण के तीसरे वर्ष के दौरान फूल आना शुरू हो जाते हैं। फूलों के आने का मुख्य समय जनवरी-मार्च, जून-जुलाई और अक्टूबर-नवंबर है। सामान्यतौर पर इसमें फल गुच्छों में आते हैं एवं उनका आकार गोल और बड़ा होता है।



थार वैभव

सिंचित अर्ध-शुष्क परिस्थितियों में कीटों और रोगों की अधिक समस्या थार वैभव में नहीं होती है। लेमन बटरफ्लाई पौधों के नए



पलवार

विकास चरण के दौरान नई उभरी पत्तियों को नुकसान पहुंचाती है और इसे 15 दिनों के अंतराल पर डाइमेथोएट / 1.5-2.0 मिली / लीटर के 1-2 छिड़काव द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। जरूरत पड़ने पर गमोसिस के नियंत्रित करने के लिए, बोर्डो पेस्ट या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का छिड़काव मासिक अंतराल पर करना चाहिए।